Mona
Assistant Professor (Guest Faculty)
Department of Economics
Maharaja College
Veer Kunwar Singh University, Ara
B.A.Economics, Part -2
Paper-lll
Topic: Features of Indian economy

भारतीय अर्थव्यवस्था**:**

भारतीय अर्थव्यवस्था को दुनिया की विकासशील अर्थव्यवस्था कहा जाता है। कम प्रति व्यक्ति आय, गरीबी रेखा से नीचे की अधिक जनसंख्या, खराब बुनियादी ढाँचा, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और पूंजी निर्माण की कम दर जैसी कुछ विशेषताओं ने इसे दुनिया में विकासशील अर्थव्यवस्था का दर्जा दिया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की कुछ विशेषताएँ नीचे दी गई हैं:

1. कम प्रति व्यक्ति आय**:** भारत की प्रति व्यक्ति आय विकसित देशों की तुलना में बहुत कम है। केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ) के अनुमानों के अनुसार, वर्ष 2015-16 के लिए वर्तमान कीमतों पर देश की प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय 93231/- रुपये के स्तर पर पहुँचने का अनुमान है। वर्ष 2015-16 के लिए स्थिर मूल्यों (2011-12) पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय 77,431/- रुपये के स्तर पर पहुंचने का अनुमान है। सीएसओ के अनुमानों के अनुसार, वर्तमान मूल्यों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय है:

2012-13 …….71050/- रुपये

2013-14 …….79412/- रुपये

2014-15 …….86,879/- रुपये

स्थिर मूल्यों (आधार वर्ष 2011-12) पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय

2012-13 …….65,664/- रुपये

2013-14 …….68867/- रुपये

2014-15 …….68867/- रुपये 72889/-

भारत में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद पिछली बार 2019 में 2169.10 अमेरिकी डॉलर दर्ज किया गया था। भारत में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद दुनिया के औसत के 17 प्रतिशत के बराबर है।

2. कृषि आधारित अर्थव्यवस्था**:** कृषि और संबद्ध क्षेत्र भारतीय सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 14.2% प्रदान करते हैं जबकि कुल भारतीय जनसंख्या का 53% कृषि क्षेत्र पर आधारित है।

3. अधिक जनसंख्या**:** हर दशक में भारतीय जनसंख्या में लगभग 20% की वृद्धि होती है। 2001-11 के दौरान जनसंख्या में 17.6% की वृद्धि हुई। वर्तमान में भारत हर साल ऑस्ट्रेलिया की कुल जनसंख्या में इज़ाफा कर रहा है। भारत पूरी दुनिया की लगभग 17.5% आबादी का मालिक है।

हमारा देश दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है, जिसकी आबादी दुनिया की लगभग पाँचवीं है। विश्व जनसंख्या संभावनाओं के 2019 संशोधन के अनुसार जनसंख्या 1,352,642,280 थी।

4. आय असमानताएँ: क्रेडिट सुइस द्वारा जारी एक रिपोर्ट से पता चला है कि सबसे अमीर 1% भारतीयों के पास देश की 53% संपत्ति है, जबकि शीर्ष 10% का हिस्सा 76.30% है। दूसरे शब्दों में कहें तो, इस चौंकाने वाले आँकड़ों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था को व्यक्त करने वाले तरीके से, भारत के 90% लोगों के पास देश की एक चौथाई से भी कम संपत्ति है।

5. पूंजी निर्माण की कमी: आय के निम्न स्तर के कारण पूंजी निर्माण की दर कम है। सकल घरेलू पूंजी निर्माण 1993-94 में 23.3% था जो 2007-08 में 38.1% के स्तर तक बढ़ गया लेकिन 2012-13 में 34.8% तक गिर गया।

आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त स्रोतों से संकलित विश्व बैंक के विकास संकेतकों के संग्रह के अनुसार, 2019 में भारत में सकल पूंजी निर्माण (जीडीपी का%) 30.21% दर्ज किया गया।

6. अवसंरचना विकास का पिछड़ापन: हाल ही में हुए एक अध्ययन के अनुसार, 25% भारतीय परिवारों के पास बिजली नहीं है और 97 मिलियन लोगों के पास सुरक्षित पेयजल नहीं है और भारत में 840 मिलियन लोगों के पास स्वच्छता सेवाएँ नहीं हैं। भारत को 2025 तक अवसंरचना विकास के लिए 100 मिलियन डॉलर की आवश्यकता है।

7. बाजार की खामियाँ: भारतीय अर्थव्यवस्था में एक स्थान से दूसरे स्थान तक अच्छी गतिशीलता नहीं है जो संसाधनों के इष्टतम उपयोग में बाधा डालती है। ये बाजार की खामियाँ हर साल वस्तुओं की कीमत में उतार-चढ़ाव पैदा करती हैं।

8. अर्थव्यवस्था गरीबी के दुष्चक्र में फंसी हुई है: प्रो. रैगनर नर्कस कहते हैं कि 'एक देश गरीब है क्योंकि वह गरीब है'। इसका मतलब है कि गरीब देश गरीबी के दुष्चक्र में फंसे हुए हैं। गरीबी हमारे देश की प्रमुख समस्याओं में से एक है।

2019 में, भारत सरकार ने कहा कि इसकी 6.7% आबादी अपनी आधिकारिक गरीबी सीमा से नीचे है।

9. पुरानी तकनीक का उपयोग: यह बहुत स्पष्ट है कि भारतीय उत्पादन तकनीक प्रकृति में अधिक श्रम-उन्मुख है। इसलिए यह उत्पादक देशों की उत्पादन लागत को बढ़ाता है।